VOL- XI | ISSUE- III | MARCH | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

बाल–साहित्य और मानवीय मूल्य

डॉ. नवज्योत भनोत
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (हिंदी)
डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

मानवीय मूल्य वे सार्वभौमिक मूल्य हैं जो समस्त विश्व के समाजों और संस्कृतियों द्वारा साझे किए जाते हैं। ये मूल्य मानव जीवन के सिद्धांत के रूप में जीवन को अर्थ प्रदान कर उद्देश्यों की ओर ले जाने का कारण बनते हैं, अर्थात मूल्य, मानव को परंपरागत समाज द्वारा दी गई वे मान्यताएं, अवधारणाएं तथा वैचारिक इकाईयां है जिनमें आदर्श, अनुभूति, मानवीय संवेदना, उपयोगिता तथा प्रेरणा का समावेश रहता है, इनके आधार पर न केवल व्यक्ति का जीवन उन्नत, उद्दात्त तथा समृद्ध बनता है, प्रत्युत अंतरीकरण की प्रक्रिया से समाज प्रगति पथ पर अग्रसर होता है।

बालक के मूल में अपरिवर्तनीय प्रारंभिक जिज्ञासु भाव के परिणाम स्वरुप बाल–साहित्य लेखन से बहुत पहले वाचन और श्रवण परम्परा की लोक कथाओं एवं लोरियों से मूल्यों के हस्तांतरण का कार्य आरंभ हुआ। इस प्रकार पारम्परिक बाल–साहित्य जैसे परी–कथाओं, देवी–देवताओं की कथाओं, राजा–रानी की कथाओं ने, सदाचार, नैतिकता, असत्य पर सत्य की विजय या बुराई पर अच्छाई की विजय दिखलाकर मानवीय मूल्यों को बालकों में अनुप्राणित करने का कार्य किया।

ये शाश्वत सनातन मूल्य देश–काल, जाति–धर्म से निरपेक्ष होकर समाज में विद्यमान रहकर बालकों के वैयक्तिक और सामाजिक गुणों को परिमार्जित करते हुए एक युग से दूसरे युग में हस्तांतरित होते हैं। आज विकास एवं प्रगति की अंधी दौड़ में शाश्वत मूल्यों की अनदेखी के कारण मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को अत्यन्त तीव्रता से महसूस किया जा रहा है। बाल–साहित्य बालकों में इन मानवीय मूल्यों के बीजारोपण द्वारा समाजीकरण के श्रेष्ठ भावों को जागृत करके उन्हें विशिष्ट बनाता है। आज मूल्यों के बिखराव को देखते हुए बालकों की चेतना में मानवीय मूल्यों का अंकुरण आवश्यक है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक के बाल–साहित्य में मूल्यों और जीवन की पारस्परिकता से आदर्श और आध्यात्मिक स्थिति तक ले जाने के सुनियोजित लेखकीय कर्म को प्रमुखता दी गई है। बाल–साहित्य लेखक सामाजिक आवश्यकताओं एवं लोकहितकारी मूल्यों को आधार बनाकर भारतीय सभ्यता एवम् संस्कृति को बालकों में अनुप्राणित करने का कार्य रहे हैं।

मुख्य शब्द– *भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्य, अवधारणा, सनातन मूल्य, वैश्विक मूल्य, उपभोक्ता संस्कृति, समाजीकरण, आत्म नियंत्रण, सम्यक ज्ञान।*

परिचय

साहित्य एक पावन माध्यम है जिसके सत्प्रयोग से हम अज्ञान की तामसिकता से संघर्ष कर ज्ञानात्मक शक्तियों को जाग्रत कर सकते हैं। साहित्य में भूतकाल की गूंज, वर्तमान का प्रतिबिम्ब तथा भविष्य के निर्माण की शक्ति होती है। डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं तेजोमयी वाक द्वारा पाठक जीवन के प्रति अधिक मानवीय उदार दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं, जिस दुनिया में वे जीते है, उसे अधिक समझ सकते हैं और भविष्य के लिए विवेकमय योजना बना सकते हैं।

मानवीय मूल्य ऐसी आचार संहिता या सदगुणों का समूह होता है जिन्हें अपने जीवन में अपनाकर व्यक्ति समाज एवं मानव हित के कार्य करता है। मानवीय मूल्यों में मनुष्य की अवधारणाएँ, विश्वास, मनोवृत्ति, निष्ठा, त्याग, प्रेम, सत्य, अहिंसा, परोपकार इत्यादि गुण समाविष्ट होते हैं। इनका प्रयोग व्यक्ति परहितार्थ करता है। इनमें से कुछ परिवर्तनशील और कुछ अपरिवर्तनशील होते है। परिवर्तनशील मूल्य युगधर्म के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। अपरिवर्तनशील शाश्वत होते हैं जिन्हें सनातन मूल्य भी कहा जाता है, ये देश काल, जाति, धर्म से निरपेक्ष होते हैं

तथा एक ही स्थिति में हर काल में विद्यमान रहते हैं ये दोनों मूल्य सापेक्ष होते हैं। इन्हें अलग करके भी नहीं देखा जा सकता। यह एक प्रकार के मूल्य सम्पूर्ण विश्व के कल्याण से सम्बन्धित वैश्विक मूल्य होते हैं जो जाति, वर्ग, समूह देश से उपर होते हैं।

आज की पाश्चात्य उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव स्वरूप मानव व्यावसायिक होकर मानवीय मूल्यों की अनदेखी कर रहा है। वह भौतिकता की चकाचौंध में गर्व महसूस कर रहा है। उपभोक्ता संस्कृति ने हमारी चेतना को स्वार्थ की पर्तों से निष्प्रभ कर दिया है। इस प्रकार की गहरी उपेक्षा मानवीय मूल्यों कोश मौलिकता से साथ प्रतिष्ठित करने की मांग करती है। लोभ, स्वार्थ, निष्ठाहीनता, निर्दयता, कर्तव्यहीनता, घृणा, ईर्ष्या इत्यादि भावों ने भारतीय समाज को अभिशप्त कर दिया है। ऐसे समय में दया, करूणा, सत्य अहिंसा, परोपकार, त्याग, मैत्री जैसे मानवीय मूल्यों की महत्ती आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। "आज जब मानव मूल्यों का विघटन हो रहा है नैतिक मूल्य गिर रहे हैं, स्वार्थ भ्रष्टाचार अनैतिकता का बोलबाला है और भारतीय संस्कृति की गरिमा धूमिल हो रही है ऐसे समय में बाल साहित्यकारों की भूमिका बड़ी अहम् है। उन्हें ऐसे बाल साहित्य सृजन की ओर उन्मुख होना है जो क्षणिक मन बहलाव का न होकर स्थाई रूप से बच्चों के चरित्र विकास में उनका मनोबल ऊंचा करने में प्रेरक सिद्ध हो।"[२]

बाल–कथाएँ इन सभी प्रवृतियों को पूरी तरह विकसित होने का अवसर प्रदान करती हैं। राजेश अरोड़ा की गुरूमंत्र, सच्चा पुरस्कार, दीनदयाल शर्मा की 'पापा झूठ नहीं बोलते', राजकुमार आदि की चरित्र निर्माण की कहानियाँ बालकों में विनय, विनम्रता एवं दूसरों के प्रति आदर के भावों को जगाती हैं। इन्हीं प्रवृतियों के आधार पर बालक अपनी सामाजिक भावना को दृढ़ एवं परिष्कृत करते हुए मानवीय गुणों को विकसित करते हैं।

सामाजिक और वैयक्तिक दोनों ही दृष्टियों से मानवीय मूल्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, इन मूल्यों के बल पर ही बालकों में उत्तम राज्य के आधार स्तम्भ, ईमानदारी परिश्रम और कर्तव्य परायणता के गुण विकसित किए जा सकते हैं। रामगोपाल वर्मा की 'तितली और फूल', कोढ़ी, मानव प्रेम के भाव दर्शाती है तो 'प्यारा मुर्गा' 'कुक्कुट' हँस मेरा है, जीवन प्रेम की कहानियाँ हैं। सदाचार नैतिकता भाई–बहन, भ्रातृत्व भावना, 'नन्हा मित्र' मित्रता, मेरे अच्छे साथी, साहचर्य, चोरी, त्याग, राजकुमारी, निर्धन–सेवा, नेवला और होलिका समर्पण एवं प्रेम जैसे मानवीय भावों को विकसित करने वाली कहानियाँ हैं।

विकास एवं प्रगति की इस अन्धी दौड़ में खोते जा रहे शाश्वत मूल्यों को पुनः प्राप्त करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है। सहानुभूति हमारी स्वाभाविक प्रवृति होती है। दूसरों की भावनाओं और संवेदनाओं से प्रभावित होने की अनायास प्रक्रिया से उपजे इस गुण का बालकों में होना आवश्यक है क्योंकि वह इससे दूसरें लोगों से सम्बन्ध स्थापित कर समाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। सहानुभूति स्थाई भावों के निर्माण में सहायक होकर बालकों में देश भक्ति, सत्यप्रियता, निष्ठा इत्यादि स्थायी भावों को जाग्रत करने में सहायक है। मुनि कन्हैया लाल की 'सहानुभूति' कहानी में सहानुभूति को सफलता का महामन्त्र बताते हुए उसे टूटे दिलों को जोड़ने वाली अगम्य शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है कहानीकार कहते हैं–

"आपस का सहयोग ही, सफल सफलता मन्त्र।
मित्रभाव बिना क्या कभी चल सकता है जन–तन्त्र।"

एक अन्य कहानी में मुनि लिखते है कि महापुरूष वही होते है जो सबके प्रति सहानुभूति और सद्भावना रखते हैं, समय पर जो किसी का सहयोग करता है, उदारता का परिचय देता है, पीड़ित मनुष्यों को गले लगाता है–वह व्यक्ति धरती पर दिवाकर की तरह चमक उठता है।[३]

इस प्रकार हर्ष सुख, प्रसन्नता आनन्द आदि आवेगों के साथ जो सहानुभूति होती है। यह वह निष्क्रिय सहानुभूति होती है, जिसमें प्रयास की आवश्यकता नहीं होती किन्तु सक्रिय अनुभूति में अपने भावों और संवेगों को दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। सहानुभूति का गुण बालकों में उत्पन्न करके हम उनमें सद्भावनाओं के प्रति अनुराग और दुष्प्रवृतियों के प्रति अरूचि उत्पन्न कर सकते हैं।

परोपकार ऐसा गुण है जिसका जगत में अमिट महत्त्व है। परोपकारी व्यक्ति सत्व के भाव प्रेरित कर हर क्षेत्र में उन्नति पाकर समाज के लोगों के लिए स्तवना का पात्र बनता है। राजा भीमसेन अपने तीन पुत्रों की योग्यता की परीक्षा परोपकार के गुण के कारण करता है।[४] इसके

अतिरिक्त भलाई, क्षमा, संतोष, मौन, सच्चाई, प्रेम, सहिष्णुता, समभाव, वचनबद्धता, विनय इत्यादि ऐसे शाश्वत मूल्य हैं, जो मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक होते हैं। मुनि जी ने आज के युग के अमानुषीकरण एवं उससे जुड़े मूल्यों के बिखराव पर चिन्ता प्रकट करते हुए इन मूल्यों को बालकों की चेतना पर अंकुरित करने का प्रयास किया है। इनकी मनुष्य एवं व्यवहार कहानी में मनुष्य द्वारा स्वार्थ सिद्धि के लिए किए गए अधम कार्य के प्रति चिंता व्यक्त की गई है। लेखक कर्तव्य–अकर्तव्य का भान रखते हुए निज स्वार्थ त्याग कर दूसरों के हितार्थ कार्य करते हुए महामानव होने को महत्त्व देते है। आर. पी. सिंह की बिछुड़ने का दर्द कहानी में बालक को सिखाया गया है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने का परिणाम बुरा होता है। बालक मुर्गी से चोंच खाकर किसी जीव को तंग न करने का प्रण लेता है। डॉ. रामगोपाल वर्मा की 'हँस मेरा है' में दयालु राजकुमार के माध्यम से तीर से बिधे हंस को बचाना भी मानवीय मूल्यों को दर्शाता है।

संत पुरुषों ने इस शरीर को नित्य–मित्र, परिवार को पर्व मित्र और धर्म को नमस्कार मित्र कहा है। दुःख में सच्चा सहयोगी धर्म ही है।[५] मुनि श्रद्धा का महत्व कहानी में बुढ़िया और महात्मा के माध्यम से हर क्षेत्र में श्रद्धा के महत्व को बताते हुए कहते है कि श्रद्धा के अभाव में कोई भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में अधिक से अधिक श्रद्धा को स्थान देना चाहिए। 'आप भला तो जग भला' कहानी में कहा गया है कि आत्मदान शांति की मंजिल है और आत्म नियन्त्रण से व्यक्ति सच्चे सुख को प्राप्त करता है जिससे सारा विश्व उसके सम्मुख अवनत हो जाता है। सम्पत्ति और विपत्ति कहानी में राजा भोज की विवेकशीलता और उदारता के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए निष्कर्ष प्रेषित किया गया है, सम्पत्ति–विपत्ति दोनों में समभाव रखते हुए मन की असंतोषी वृति का त्याग कर संतोषी वृति को धारण करने की सीखे दी गई है। 'सच्चाई का सम्मान' कहानी में डी. आई. जी. रामेश्वरलाल शर्मा लक्ष्मण सिंह को उसकी सच्चाई और ईमानदारी के कारण पुलिस सब इंस्पेक्टर बनाकर, राष्ट्रपति द्वारा पदक दिलवाकर बालकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

प्रेम जीवन का शाश्वत मूल्य है, जिसकी आवश्यकता कभी कम नहीं होती 'प्रेम परीक्षा' कहानी में प्रेम के गिरते स्तर का विश्लेषण करते हुए सच्चे प्रेम की महत्ता को प्रदर्शित किया गया है। लेखक लिखते है 'प्रेम परीक्षा हो गई, सच्चा प्रेम करने वाला कोई नहीं है, सब दिखावटी प्रेम करने वाले है। माता–पिता भगिनी आदि परिवार के सभी सदस्य तो बदले किन्तु जिस कान्ता को मैं अर्द्धांगिनी समझता था, जिसको मैं मेरी मेरी कहकर पुकारता था वह भी मुझे जीवन का आधार एवं सर्वेसर्वा मानती थी वह कान्ता भी बदल जायेगी, मुझे जीवनदान देने में सिर धुनेगी, ऐसी कल्पना स्वप्न में भी नहीं कर सकता था, धिक्कार है ऐसी स्वार्थ भरे संसार को।[६]

'नीति का महत्व' कहानी में नैतिकता एवं ईमानदारी की चर्चा करते हुए कहा गया है कि इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति की सर्वत्र पूजा होती है, और उसे सम्मान मिलता है। साम्य की साधना जीवन की साधना है लेखक ने अपनी 'समभाव' कहानी में इसे आभूषण माना है जिसके बिना मानव संसार बेकार है और इसके अभाव में कोई भी व्यक्ति महान नहीं बन सकता इसी प्रकार सहृदयता का महत्व बुरे का फल बुरा, दृढ़धर्मी, संयम में स्थिर, निन्दा की स्तुति में समता, समर्पण का महत्व, सन्तवाणी सत्य, आत्मा में अनन्त शक्ति, पुरुषार्थी, विनय की अपूर्व शक्ति गुणग्राही, संत समागम, गुण–अवगुण, निस्पृही बनो, सन्तों को मत सताओ, चन्दन और कीचड़, क्रोध को मन्द करो, बदनीति और शुद्ध नीति, सहयोगी मित्र, सम्यक ज्ञान, विवेकहीनता, ज्ञान से विकास, पुष्पोदय का फल, संसार से निर्लिप्तश भावना का महत्व, तपस्या इत्यादि कहानियों के माध्यम से इन सदगुणों का जीवन में महत्त्व बताया गया है। लेखक मानते है कि इन गुणों के अभाव में मानव जीवन अभिशप्त हो जाता है। इन मानवीय मूल्यों को महत्व देकर ही आने वाली पीढ़ी सदाचार ईमानदारी, परोपकार, दया, प्रेम, सत्यनिष्ठा एवं सहनशीलता से ओत–प्रोत हो पाएगी, तथा भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल स्वरूप विश्व के समक्ष आ पाएगा।

रोहिताश्व अस्थाना की 'सुनो कहानी गुणों कहानी बाल संग्रह की सेवा का फल' कहानी बालकों को सभी प्राणियों से समभाव रखने को प्रेरित करती है। उसमें एक बड़े घर का लड़का नमित गरीब और असहाय बालक

नसीम की सहायता कर मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वह उसकी बीमारी की अवस्था में उसके अखबार बाँटने और प्याऊ पर पानी पिलाने जैसे कार्य कर परोपकारी मूल्यों में आस्था प्रकट करता है। इनकी 'भूत से टक्कर' कहानी में सम्प्रदाय से उपर उठकर हिन्दु–मुस्लिम मित्रता के माध्यम से मैत्री और सद्भाव को दर्शाते हुए मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है। 'एक अनोखा सबक' कहानी उच्च और निम्न वर्ग के बीच की दूरी को कम करके दोनों में सामंजस्य बिठाने के उद्देश्य से लिखी गई है। डॉ. जिदल का इकलौता पुत्र अभिनव अपने उच्च स्तरीय परिवार वालों के विपरीत समानता के मूल्यों में विश्वास रखता है। परिवार वालों के स्तर के विरूद्ध जाकर वह अपने सहपाठी निर्धन पंगु और मंगू दोनों भाइयों से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करता है। इस कहानी के अन्त में लेखक ने गरीब चाँदमोहन द्वारा अमीर की सहायता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समानता के मूल्य को प्रतिष्ठित किया है। रोहिताश्व अस्थाना की एक अन्य कहानी 'पढ़ाई अभी छोड़ी नहीं' भी प्रेमभाव को अभिव्यक्ति करने के साथ–साथ ईर्ष्या जैसे भावों का दुष्परिणाम दिखाकर बालकों में प्रेम एवं सत्य के प्रति स्पर्धा का भाव दिखाती है।

धोखे से झूठे प्रेम का झाँसा देकर पिकनिक पर ले जाकर खाने में घातक पदार्थ खिलाने से वह अशक्त और बीमार हो जाता है। किन्तु वह बड़ों के प्रति आदर रखने वाला निष्ठावान व मेहनती बालक है।अन्त में अंकित और अमित माफी मांगते है तो वह दुर्व्यवहार भुलाकर उन्हें गले से लगा लेता है, जो उसकी क्षमाशीलता का भी परिचायक है। इस कहानी में प्रिंसीपल साहब भी मानवीय मूल्यों के पोषक रूप में प्रस्तुत किए गये हैं।

इस प्रकार बाल कथा साहित्य में संस्कृति, समाज, राष्ट्र, विश्व बंधुत्व, शिक्षा और बच्चों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानवीय मूल्यों को अंकित करने का कार्य सफलतापूर्वक किया गया है। निश्चित तौर पर इस बाल साहित्य को बालकों के आत्मविश्वास,आत्म–विकास एवं आत्मनिष्ठा संचरण और आधुनिक जीवन की चुनौतियों के अनुरूप ढालने वाले महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जा रहा है।

निष्कर्ष

बाल साहित्य की मानवीय मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह मूल्य बालकों में दया, करुणा, सत्य, अहिंसा, परोपकार, त्याग, मैत्री आदि मूल्यों को पूरी तरह विकसित होने का अवसर देते हैं। वर्तमान के बदलते परिवेश में नए मूल्यों के निर्धारण की प्रक्रिया में साहित्यिक मूल्यों की रचनात्मकता एवं गुणात्मकता बनाए रखना अत्यन्त सतर्कता का कार्य है। आध्यात्मिक एवं योगसाधनात्मक मूल्यों की तरह मानवीय विचारणा वाले मूल्यों के मूल में भारतीय चिंतन अंतर्निहित रहता है और इन्हीं से बालकों में मानवीय गुण संचरित करने का कार्य संपन्न किया जा रहा है। 'भारतीय चिंतन परंपरा को गोविंद चंद्र पांडे जी ने भारतीय सांस्कृतिक आध्यात्मिक विचारधारा के नाम से पुकारा है।[७]

बाल–साहित्य इन मानवीय मूल्यों के माध्यम से बालकों को व्यापकता और गुणवत्ता के साथ संघर्ष की शक्ति प्रदान करने का कार्य करता है। बालक इन मानवीय मूल्यों को जीवन दृष्टि का आधार बनाकर उन्हें उपलब्धि की प्रक्रिया में रुपायित कर जीवन में सौंदर्य, उद्दात्तता और सामंजस्य को धारण करने में सक्षम होते हैं, इसीलिए आज के रचनाकार मूल्यों का पुनर्सृजन करते हुए सजगता के साथ बालकों की संवेदनशीलता को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। यह मानवीय मूल्य ही हैं जो सामाजिक मूल्यों के संघर्ष, संक्रमण और घोर व्यक्तिवादिता के समय में बालकों द्वारा सामाजिक मूल्यों को ह्रास से बचाकर सामूहिक और कल्याणकारी मूल्यों की तरफ ले जाने का कार्य कर रहे हैं। प्रारंभिक बाल साहित्य से लेकर आज तक के साहित्य में विद्यमान मानवीय मूल्य बालकों को यथार्थ चिंतन के अवसर उपलब्ध करवाने का कार्य कर रहे हैं। बाल–साहित्य में चित्रित मानवीय मूल्यों के कारण ही बालकों में समायोजन क्षमता और नवीन एवं पारंपरिक मूल्यों में संतुलन साधने की क्षमता उत्पन्न होती है। वर्तमान में बढ़ रही मूल्य विघटन की संभावनाएं हों या सामाजिक जटिलताएं इस प्रकार की स्थितियों में प्रतिबद्धता का गुण विकसित कर ये मानवीय मूल्य बालकों में संवेदनशीलता, सशक्तता, परिपक्वता, दूरदृष्टि, सामुदायिकता, सहयोगिता, संगठनात्मकता इत्यादि गुणों के विकास में सहायक हो रहे हैं।

सन्दर्भ

१. संपादन गिरिराज शरण अग्रवाल शोध दिशा हिंदी साहित्य निकेतन बिजनोर दिसंबर २०१७
२. सुरेन्द्र विक्रम. हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास साहित्य वाणी, इलाहाबाद, सन् १९९१, लेखक द्वारा लिखे गए शंकर सुल्तानपुरी के साक्षात्कार से, पृ.सं. १४
३. मुनि कन्हैया लाल बाल कहानियां, पृ.सं. ३५४
४. मुनि कन्हैया लाल बाल कहानी, पृ.सं. ३९३
५. मुनि कन्हैया लाल बाल कहानी, पृ.सं. १७
६. मुनि कन्हैया लाल बाल कहानी, पृ.सं २२२
७. गोविंद चंद्र पांडे मूल्य मीमांसा पृ.सं. ८, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर प्रथम संस्करण १९८९